अध्याय - 1

अध्याय 1

परिचय

परिचय :

वर्तमान समय में समावेशी शिक्षा समाज के सभी बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने की बात का समर्थन करती है । एक मायने में यह सर्व शिक्षा जैसे शब्दों का ही रूपांतरित रूप है जिसके कई उद्देश्यों में से एक उद्देश्य है "विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा।

समावेशी शिक्षा का आशय दिव्यांग या विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को ऐसा वातावरण प्रदान करना है जिससे उनके सीखने की प्रक्रिया में कम से कम बाधाएं रह जाएं, वह कक्षा के शेष बच्चों की भांति सीख- समझकर आगे बढ़े और उनका समुचित विकास हो । इससे सामान्य बच्चों और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के बीच सभी स्तरों पर स्वस्थ सामाजिक संबंध विकसित होने के लिए अवसर मिलता है । सामाजिक गतिविधियों में समान रूप से भाग लेने का

अवसर मिलने से उनमें परस्पर अलगाव या दूरी घट जाती है एवं एक दूसरे के निकट आने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं । इस प्रकार के

वातावरण से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को समान शैक्षिक अवसर प्राप्त होता है तथा वे समाज

के अन्य सदस्यों की भांति जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की योग्यता

विकसित कर लेते हैं ।

सामान्यतः सभी के लिए और विशेषता: अध्यापकों के लिए हृदयंगम करने की बात यह है कि विभिन्न प्रकार की विशेष आवश्यकताओं से ग्रस्त बच्चे भी समाज के महत्वपूर्ण अंग हैं और देश तथा समाज के विकास कार्यों में यह भी अन्य लोगों की भांति महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं । अतः यह स्वाभाविक अपेक्षा है कि इन बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयुक्त व्यवस्था की जाए इस दृष्टि से उन्हें समाज के शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर एवं प्रोत्साहन देना बहुत आवश्यक है । विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा के संबंध में अनेक प्रकार की गलत धारणाएं प्रचलित हैं । उदाहरण के लिए बहुत से अध्यापकों का विश्वास है कि विभिन्न प्रकार की अक्षमताओं से ग्रस्त बच्चों की शिक्षा के लिए विशेष प्रकार की तकनीकों की आवश्यकता होती है किंतु यह सत्य नहीं है ।

समावेशी शिक्षा में एक शिक्षक के लिए सबसे बड़ी शिक्षण दक्षता की आवश्यकता यह होती है कि उसके लिए हमेशा एक चुनौती सामने रहती है कि वह अपनी कक्षा में पढ़ने वाले सारे विद्यार्थियों में आपस में किस तरह समन्वय बना पाता है। किसी भी कक्षा में अलग-अलग प्रतिभा वाले छात्र हो सकते हैं। कुछ छात्र तेजी से सीखते हैं तो कुछ मध्यम गति से और कुछ अत्यंत धीमी गति से सीखते हैं। सीखने की अलग-अलग प्रवृत्ति वाले इन छात्रों में सबके बीच संतुलन बनाने की दक्षता एक समावेशी शिक्षण शिक्षक में होनी अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह एक जटिल प्रक्रिया है।

1.1.1. अधिगम अक्षमता

अधिगम अक्षमता वाले बालक मनोविज्ञान के लिए एक अबूझ पहेली बने हुए हैं । इस प्रकार के बालकों की समस्याओं से हालांकि मनोवैज्ञानिक परिचित तो हैं परंतु उनके विचारों में अभी भी मतैक्य का अभाव है । ऐसे बालक देखने में तो सामान्य नजर आते हैं किंतु शैक्षणिक रूप से पिछड़े होते हैं अधिगम अक्षमता एक ऐसी समस्या है जिसमें बालक साधारण होते हुए भी पढ़ने- लिखने संबंधित क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की कठिनाई अनुभव करते हैं । इन बालकों में शैक्षिक निष्पादन से जुड़ी हुई विभिन्न समस्याओं जैसे- लिखना, पढ़ना, नकल करना, भाषा व वाणी संबंधी दोष, गणितीय संप्रत्यय की समझ में कठिनाई आदि का सामना करना पड़ता है । इस

प्रकार ऐसे बालक साधारण बालकों की अपेक्षा शैक्षणिक क्षेत्र में पिछड़ेपन का लक्षण दिखलाते हैं । प्राय: इस प्रकार के बालकों को साधारण बोलचाल में भाषा में मंद शैक्षिक बालक भी कहा जाता है ।

मनोविज्ञान में अधिगम नि:शक्त या अक्षमता से जुड़े अनेक अध्ययन हुए हैं । इनमें पहला विस्तृत अध्ययन **मार्गन(1896)** का है जिन्होंने अक्षम बालकों को दृष्टि हीनता के नाम से पुकारा । **विर्क (19757)** ने अधिगम अक्षमता को जानने के लिए शोध किया जिसमें उन्होंने प्रमस्तिष्क प्रभुत्व का शिक्षण पर प्रभाव माना । **जॉनसन एवं माइकल बेस्ट(1967)** में ऐसे बालकों के स्नायु संबंधी विकारों का वर्णन किया । उपरोक्त अध्ययनों के विपरीत **सैमुअल क्रिक** ने 1962 में अधिगम संबंधी विभिन्न समस्याओं के लिए अधिगम अक्षमता(Learning Disability) शब्द का सृजन किया ।

टेमिल एवं अन्य के अनुसार "अधिगम निर्योग्यता एक ऐसा शब्द है जो असमान रूप से सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने जैसी योग्यताओं में बालक परेशानी का अनुभव करता है । यह परेशानियां आंतरिक होती हैं जो केंद्रीय स्नायु मंडल के विकृत क्रिया के फलस्वरुप घटित होती हैं तथा अधिगम निर्योग्यता असामान्य परिस्थितियों तथा परिवेश के प्रभाव के कारणों के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होती हैं ।" **लाल एवं जोशी** के अनुसार "जिन

बालकों में सीखने के लिए आवश्यक शारीरिक एवं मानसिक क्षमता औसत बालकों से कम होती है और जिन्हें कुछ भी सीखने में कठिनाई होती है उन्हें कम सीखने की क्षमता वाले बालक कहा जाता है ।" **अमेरिकी पब्लिक कानून** के अनुसार

"अधिगम की अक्षमता का अर्थ ऐसे दोस्त से है जो एक या एक से अधिक बुनियादी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं से जुड़ा है जो भाषा को समझने और लिखित या मौखिक प्रयोग से संबंधित है । इस विकृति से पढ़ने, लिखने, बोलने, चिंतन करने और गणितीय सवालों को हल करने के कौशल में समस्या आती है ।" उपरोक्त परिभाषा ही भारत में स्वीकार की गई है । ऊपर वर्णित परिभाषा ओं के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिगम अक्षमता में बोधात्मक क्या प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक कठिनाइयां, दिमाग की चोट मस्तिष्क की कार्य प्रणाली में चोट आदि विकार शामिल हैं अधिगम अक्षमता व्यक्ति की मानसिक बीमारी आर्थिक स्थिति एवं सामूहिक पृष्ठभूमि की वजह से नहीं होती

1.1.3: सीखने की अक्षमताओं के प्रकार

डिस्लेक्सिया एक विशिष्ट सीखने की अक्षमता जो पढ़ने और संबंधित भाषा-आधारित प्रसंस्करण कौशल को प्रभावित करती है।

डिस्केलकुलिया एक विशिष्ट सीखने की अक्षमता जो किसी व्यक्ति की संख्याओं को समझने और गणित के तथ्यों को सीखने की क्षमता को प्रभावित करती है।

डिसग्राफिया एक विशिष्ट सीखने की अक्षमता जो किसी व्यक्ति की हस्तलेखन क्षमता और ठीक मोटर कौशल को प्रभावित करती है।

डिस्फैसिया ग्रीक भाषा के दो शब्दों डिस और फासिया जिनके शाब्दिक अर्थ अक्षमता एवं वाक् होते हैं से मिलकर बने है, शब्द डिस्फैसिया का शाब्दिक अर्थ वाक् अक्षमता से है। यह एक भाषा एवं वाक् संबंधी विकृति है जिससे ग्रसित बच्चे विचार की अभिव्यक्ति व्याख्यान के समय कठिनाई महसूस करते हैं। इस अक्षमता के लिए मुख्य रूप से मस्तिष्क क्षति (ब्रेन डैमेज) को उत्तरदायी माना जाता है।

डीस्प्रैक्सिया यह मुख्य रूप से चित्रांकन संबंधी अक्षमता की ओर संकेत करता है। इससे ग्रसित बच्चे लिखने एवं चित्र बनाने में कठिनाई महसूस करते हैं।

1.2: प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक की भूमिका

प्राथमिक शिक्षा एक बच्चे को अपनी भाषा में पढने-लिखने का अवसर प्रदान करती है । वह भाषा ज्ञान के साथ-साथ बुनयादी गणित आदि सीख लेता है ।

प्राथमिक शिक्षा एक बच्चे को विद्वान तो नहीं बनाती पर उसे वह मार्ग दिखानें का कार्य अवश्य करती है जिसपर चलकर बच्चा भविष्य में बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर सफल हो सकता है प्राथमिक स्तर पर बालकों के अंदर क्रिया के प्रति प्रेम, ईर्ष्या, द्वेष प्रतियोगिता से संवेग प्रकट करना प्रारंभ हो जाता है बालकों का उचित संवेगात्मक विकास विद्यालय व्यवस्था के ऊपर निर्भर करता है जिसमें शिक्षक का महत्व पूर्ण योगदान होता है

शिक्षण और सीखना सभी विद्यार्थियों के लिए और विशेष रूप से विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अर्थपूर्ण समावेशन का अर्थ है कि सभी विद्यार्थियों को उत्तेजक और सहायक कक्षा के वातावरण में पढ़ाया जाता है जहाँ उनका सम्मान और मूल्य किया जाता है। मुख्यधारा के शिक्षकों की अपनी कक्षाओं में सभी विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए पहली पंक्ति की जिम्मेदारी है। तदनुसार, कक्षा के शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे कक्षा के भीतर विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने पाठों की सावधानीपूर्वक योजना बनाएं। उन्हें कुछ विद्यार्थियों के लिए अपने शिक्षण दृष्टिकोण को अनुकूलित करने की आवश्यकता हो सकती है जिनकी व्यक्तिगत प्रगति, आवेदन, प्रेरणा, संचार, व्यवहार या साथियों के साथ बातचीत चिंता का कारण है। इसके लिए लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता हो सकती है इन जरूरतों से संबंधित

प्रासंगिक अनुकूली कौशल विकसित करने के लिए। सभी मुख्यधारा के कक्षा शिक्षकों को शिक्षण दृष्टिकोण और पद्धतियों को लागू करना चाहिए जो विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के सार्थक समावेश की सुविधा प्रदान करते हैं।

1.2.1: प्राथमिक/ उच्च प्राथमिक शिक्षा के लिए अध्यापक शिक्षा

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने इस स्तर की शिक्षा को प्राथमिक (कक्षा 1 से 5 तक) और उच्च प्राथमिक शिक्षा (कक्षा 6 से 8 तक) के रूप में संरचित किया गया और इन दोनों ही स्तरों के लिए गया है 14 से 15 वर्ष तक के आयु वर्ग के बच्चों को इस स्तर में रखा गया है ।

कोठारी आयोग 1964 से 66 निजी स्कूल प्राथमिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था की सिफारिश की है 3 से 6 वर्ष आयु वर्ग के शिशुओं की शिक्षा है । आज हमारे देश में सामान्यतः 3 से 6 आयु वर्ग के बच्चों की शिक्षा को जिसके द्वारा उनके स्वास्थ्य की देखभाल की जाती है, उनकी इंद्रियों को प्रशिक्षित किया जाता है, उनमें अच्छी आदतों का निर्माण किया जाता है, उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जाता है और प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार किया जाता है, पूर्व प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है। प्राथमिक शिक्षा में बाल कालीन अथवा बाल पालन पोषण के शैक्षिक कार्यक्रमों पर बल दिया गया है तथा

बाल विकास के समय के उद्देश्यों को महत्व प्रदान किया गया है । अतः इस स्तर की शिक्षा अत्याधिक उपाधे हैं । प्राथमिक शिक्षा की रूपरेखा इस प्रकार की होनी चाहिए कि विकास के समस्त अंतर संबंधित आयामों शारीरिक एवं गति प्रेरक, प्रज्ञानआत्मक एवं भाषाआत्मक, सामाजिक एवं नैतिक तथा भावनात्मक एवं

सौंदर्य पारक की प्रतिपूर्ति समान रूप से हो । वस्तुतः इस अतिरिक्त पूर्व प्राथमिक शिक्षा द्वारा अभाव को दूर करना है विकृतियों को सही करना है, जो प्रारंभिक जीवन में सामाजिक प्रतिकूलता और वंचना के कारण उत्पन्न होती हैं । इस प्रकार, प्राथमिक शिक्षा प्रतिपूर्ति तथा विकास संबंधी कार्य हैं ।

1.2.2 : प्राथमिक/ उच्च प्राथमिक अध्यापक शिक्षा की समस्याएं:

प्राथमिक शिक्षा से संबंधित उद्देश्य एवं लक्ष्य की व्यवहारिक क्रियान्वयन के परिपेक्ष मे कई प्रकार की समस्याएं उत्तरदाई हैं । इन समस्याओं का समाधान किए बिना इस दिशा में सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती है । निम्नलिखित पंक्तियों में प्राथमिक अध्यापक शिक्षा से संबंधित समस्याओं का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है -

1) प्राथमिक अध्यापक शिक्षा का दोषपूर्ण पाठ्यक्रम

2) साधारणतः प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षा संस्थाएं विश्वविद्यालयों के शैक्षिक जीवन की धारा से अलग रही हैं ।

3) थोड़े से अपवाद को छोड़ दिया जाए तो सामान्यता शिक्षा संस्थाएं मध्यम या निम्न कोटी की ही होती हैं ।

4) दोषपूर्ण शिक्षा प्रशासन ।

5) शिक्षा अभ्यास के लिए नीरस तकनीकें ।

1.3: आवश्यकता और औचित्य

समवेशी शिक्षा के दौर में एक कक्षा कक्ष में विभिन्न आवश्यकताओं वाले बच्चों के बारे में सही ज्ञान और जागरूकता अत्यंत आवश्यक है ।अधिगम अक्षमता शैक्षिक पिछड़ेपन के प्रमुख कारणों में से एक है । आज शिक्षा के सार्वभौमिककरण के प्रयास के तहत विशिष्ट शिक्षा के संप्रत्यय को बल मिला है लेकिन लोगों में अभी भी जागरूकता का अभाव है। विशिष्ट बालक कौन है और विशिष्टता के कितने प्रकार हैं, इस संदर्भ में या तो लोगों को जानकारी ही नहीं है या फिर अपुर्ण जानकारी है। विशिष्ट बालक के मुख्य प्रकार जैसे अस्थि विकलांगता, श्रवण विकलांगता, दृष्टि विकलांगता आदि में तो फिर भी लोग अंतर कर लेते हैं लेकिन मानसिक ममंदता अधिगम अक्षमता पागलपन आदि की जानकारी उन्हें नहीं है। भ्रमवश वे इन सबको एक ही अर्थमें समझते हैं तथा एक ही अर्थ में प्रयोग करते हैं। यह

बहुत गंभीर समस्या। अधिगम अक्षमता के साथ ऐसा अधिकांशत: होता है।जानकारी के अभाव में ऐसे बच्चों पर पड़ने वाले दबाव उनके आत्मविश्वास को कम कर देता है । हर प्रकार के विशिष्टता की अपनी प्रकृति होती है और उस प्रकृति के अनुकूल ही हमें शिक्षण अधिगम – प्रक्रिया अपनानी पड़ती है। अत: यह आवश्यक है कि हम विशिष्ट बालकों के विभिन्न प्रकार को जाने एवं समझें।

वर्षों से शोधों ने यह पुष्टि करना जारी रखा है कि सीखने की अक्षमता वाले छात्रों को पढ़ाना एक ऐसी चीज है जो बहुत अधिक करुणा के साथ-साथ थोड़े से धैर्य की मांग करता है। शिक्षक के लिए यह संभव है कि वे प्रतिस्पर्धा करने और अपनी पकड़ बनाने की स्थिति में हों। चेन्नई शहर के साइंस सिटी ऑडिटोरियम में 30 जून 2011 को अधिगम अक्षमता वाले बच्चों के माता-पिता और शिक्षकों के लिए एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया । इस सेमिनार में UKके प्रख्यात हस्तियों द्वारा शिक्षकों एवं अभिभावकों को अधिगम अक्षमता वाले बच्चों के प्रकार , समस्याओं एवं प्रबंधन के बारे में जानकारी दी गई । 8 मार्च 2019 नवभारत टाइम्स में प्रकाशित हुए लेख में स्पेशल बच्चों के लखनऊ स्थित स्कूल आशा ज्योति की प्रिंसिपल स्वाति शर्मा जो स्पेशल एजुकेशन में BEd स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर में डिप्लोमा, लर्निंग डिसऑर्डर की मास्टर ट्रेनर है, उनकी

बताई जानकारी के अनुसार आंकड़े बताते हैं कि लगभग 10% बच्चों में लर्निंग डिसऑर्डर यानी सीखने में समस्या होती है अगर किसी क्लास में 30 बच्चे हैं तो मुमकिन है कि 3 बच्चों में यह समस्या हो । प्राथमिक शिक्षा प्रारम्भिक अथवा आधारभूत शिक्षा है। प्रारम्भिक स्तर पर सम्पन्न होने के कारण प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार है। अतः प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों की भूमिका अति महत्वपूर्ण होती है। इसलिए उनके अधिगम अक्षमता के बारे में ज्ञान, जानकारी का बालक के आधारभूत बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिक है ।D. El.Ed विद्यार्थी शिक्षक भविष्य के प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक होते हैं, अधिगम अक्षमता के बारे में उनके जागरूकता का अध्ययन आवश्यक है ।